ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 8th April 2018, Revised on 14th April 2018; Accepted 15thApril 2018

आलेख

प्राथमिक स्तरीय शिक्षक सेवाकालीन तालीम में परिवर्तन की आवश्यकता

* डॉ. नरेंद्रकुमार पाल
Assistant Professor, M.Ed. College, 38, Keshav Bunglows, New Shahibaug, Ahmedabad (drnavinsir@yahoo.in , 9924181920)

Key words: प्राथमिक शिक्षा, शिक्षक, तालीम, शिक्षक-तालीम

संक्षेप

प्रस्तुत लेख प्राथमिक-स्तरीय शिक्षा सेवाकालीन-तालीम से सम्बंधित है। लेख का मुख्य आशय शिक्षक तालीम के ऐसे बिन्दुओ पर प्रकाश डालना है जिन्हे समय समय पर दूर करके नए विचारो के साथ नवाचार के साथ आगे बढ़ाना है। शिक्षक तालीम के निश्चित उध्येश्यों के स्थापना के साथ-साथ तालीम की पूर्णाहुति तक क्या सभी उद्येश्यों की पूर्ति हो सकती है? क्या तालीम का ढाँचा और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ में तालीम शिक्षको को सहायक हो सकती है? इत्यादि कई बिन्दुओ पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत लेख में तालीम का अर्थ, महत्त्व, आवशयकता, वर्तमान तालीम का वास्तविक स्तर, तालीम में पाई जानेवाली कमियाँ और भविष्य को ध्यान में रखते हुए तालीम में जरुरी परिवर्तनों के बारे में विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना:

शिक्षा वह है जो मनुष्य के ज्ञान को विस्तृत करके मनुष्य बुद्धि को शांत, शुद्ध एवं निष्पक्ष बनाता है। शिक्षा का उपयोग सार्थक एवं उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है । बच्चों के सर्वांगी विकास में शिक्षा और माता-पिता दोनों की अहम् भूमिका होती है । वर्तमान शिक्षा एक ऐसे आधुनिक परिवेश से गुजर रही है जहाँ ज्ञान के साथ साथ नैतिक मूल्यों और तकनीक का समन्वय करके विद्यार्थियों को सम्पूर्ण बनाने की कोशिश करती है । साथ ही भविष्य में खुद के व्यवसाय, रोजगारी एवं आर्थिक स्थिति बहेतर बनाने में ज्ञानोपार्जन की भूमिका में बहोत उपयोगी साबित होती है।

वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में और कार्यक्षेत्र में कार्य करने वाले सभी की जिम्मेदारी काफी बढ़ जाती है। इन परिस्थिति में शिक्षक को अपने व्यवसाय से सम्बंधित सभी पहलुओं को समझकर स्वयं का ज्ञान और पध्दतियों को बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत-सरकार एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय इसी दिशा में समय समय पर शिक्षक प्रशिक्षण तालीम एवं सेवाकालीन तालीम का आयोजन करने के दिशा निर्देश देते रहते है । गुजरात सरकार भी समय समय पर शिक्षक तालीम की योजना बनाते रहते है । वर्तमान लेख शिक्षक तालीम में वर्तमान समय के अनुरूप परिवर्तन से सम्बंधित है । वर्तमान शोध-लेख गुजरात राज्य के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

तालीम का अर्थ:

तालीम वह है जो व्यवसाय से सम्बंधित सभी पहलुओं को पुनरावर्तित करके बहेतर से बहेतर बनाने के का प्रयास करता है, और साथ में कठिन पहलुओं को सरलतम तरीके से हस्तगत कर सके, उस तरह से समझने का प्रयास है।

व्यावसायिक तालीम प्राप्त करने से व्यवसाय से सम्बंधित व्यक्ति कुशलता के साथ साथ वर्तमान के नए तरीके, ज्ञान का विस्तार एवं नई-नई तकनीक को व्यवसाय में समन्वय और नयी समस्या को जान सकता है । तालीम व्यक्ति को व्यवसाय में सम्पूर्ण बनाने की दिशा में किया जाने वाला प्रयास है ।

शिक्षक तालीम की आवशयकता और महत्त्व :

शिक्षक समाज का वह अभिन्न हिस्सा है जिसपे समाज, देश और मानव सभ्यता के साथ साथ मूल्यों का सिंचन आगे की पीढ़ी तक हस्तांतरित होता रहता है । वर्तमान शिक्षा में काफी तेजी से परिवर्तन हो रहा है, या यूँ कहे की शिक्षा परिवर्तन के दौर से गुजर रही है । शिक्षा के जरिये विद्यार्थियों में ज्ञान, तकनीक, मूल्य, आंतराष्ट्रीय प्रतियोगिता करके खुद को स्थापित करना पड़ता है । और इन सभी चीजों को विद्यार्थीयो के मानसपट एवं व्यवहारमें उतरने के लिए शिक्षक को भी आपने आप को और ज्ञान को वर्तमान समय के अनुरूप बढ़ाना पड़ता है। शिक्षक-तालीम के इसी उद्द्येश्य के साथ आयोजित की जाती है जिससे की शिक्षक में भी आधुनिक समय के अनुरूप विकास हो सके और तालीम के पश्चात क्लास में बच्चों को ज्ञान के आदान प्रदान में कौशल प्राप्त करवा सके ।

शिक्षक-तालीम का महत्व शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए काफी उपयोगी है । साथ-साथ पढ़यक्रम में आते बदलाव और नए-नए उध्द्येश्यों, विषयवस्तु, पद्धति, तकनीक का प्रयोग और नए मूल्यों को विद्यार्थियों तक हस्तांतरित करने में सरलता प्राप्ति से सम्बंधित है ।

वर्तमान शिक्षक तालीम का स्तर:

वर्तमान शिक्षक-तालीम का स्तर काफी हद तक गिरा है । शिक्षक भी इन प्रकार की तालीम को लेकर काफी निरुत्साही रहते है, और समय व्यतीत करने का साधन मानते है । कई बार शिक्षक तालीम में अनुपस्थित रहकर मूलयवान समय की बर्बादी करते है ।

वर्तमान तालीम का प्रारूप भी कुछ इस प्रकार का होता है की तालीम का समय, स्थान, तालीम देने वाले अकुशल मास्टर-ट्रेनर, तकनिकी सुविधाओं का अभाव इत्यादि भी तालीम के उद्द्येश्यों को प्रभावित कर रही है । वर्तमान शिक्षक-तालीम के समय से सन्दर्भ में भी शिक्षक शिक्षक तालीम लेने के लिए मानसिक तौर पर खुद को तैयार नहीं कर पाते । साथ ही तालीम के समय के साथ-साथ जिस स्थान पर तालीम दी जाती है उन स्थानों पर पर्याप्त सुविधाओं का आभाव देखा जाता है। जो तालीम में शिक्षकों की मानसिकता को प्रभावित करती है । जिन विषयवस्तुओं के साथ शिक्षक तालीम की

योजना बनाई जाती है उन विषयवस्तु के साथ मास्टर-ट्रेनर की पकड़ काम होती है और विषयवस्तु को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाते ।

शिक्षक सेवाकालीन-तालीम हो या सामान्य तालीम हो, पर वर्तमान समय के अनुरूप तालीम में तकनीक का प्रयोग उतना नहीं कर पा रहे है। प्रोजेक्ट-वर्क, कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस) , टीचर्स एक्सचेंज प्रोग्राम , नए आदर्श स्कूल की मुलाक़ात जैसे कई अच्छे कार्यक्रमों को तालीम में समाविष्ट न कर पाने की वजह से शिक्षक तालीम के पुराने ढांचे में प्रभावात्मकता काम हो रही है और शिक्षक-तालीम को गंभीरता से नहीं लेते है ।

शिक्षक-तालीम में पाई जाने वाली कमियाँ:

शिक्षक तालीम में निम्न मुद्दों को लेके कमियाँ साफ़ नजर आती है:

१. शिक्षण-प्रशिक्षण तालीम की समयावधि के सन्दर्भ में भी शिक्षक खुद को लम्बे समय तक स्फूर्तीनुमा नहीं रख सकते।

२. तालीम का स्थान ऐसी शेक्षणिक संस्थानों में रखते है जहाँ सुविधाओं का निरंतर आभाव देखने को मिलता है ।

३. तकनिकी शैक्षणिक साधन सामग्री का सही प्रयोग या सही स्थिति में न होना ।

४. प्रशिक्षित विषयवस्तु के मास्टर-ट्रेनर में प्रस्तुतिकरण का आभाव।

५. नए विचारो का अमलीकरण न करना।

६. पुराने ढांचे में बदलाव न करके वही चलती आ रही प्रणाली में तालीम देना।

७. प्राथमिक सुविधाओं का निरंतर अभाव होना ।

८. मुद्रित-सामग्री का समय पर वितरण और नवीनता में उदासीनता।

९. तालीम को लेकर शिक्षक मानसिकता ढीली

१०. शिक्षकों को सही सम्मान न मिलना।

११. शिक्षक-तालीम का आयोजन करने वाले अधिकारियो का मिलने वाले आर्थिक अनुदान का दुरूपयोग।

भविष्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षक-तालीम में परिवर्तन:

वर्तमान शिक्षण-प्रणाली को ध्यान में रखते हुए शिक्षक-तालीम में भी परिवर्तन की आवशयकता जरुरी बन गई है । कुछ जरुरी सुझाव जो भविष्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान तालीम में सम्मिलित किया जाना चाहिए जो कुछ निम्नलिखित है।

१. शिक्षकों को क्लस्टर-लेवल या ब्लॉक-लेवल या अन्य सेवाकालीन तालीम या अन्य किसी भी तालीम की योजना बनाते हुए समय सीमा निश्चित करनी आवश्यक है। यह तालीम का समय सिमित करना आवश्यक है ।

२. शिक्षकों को दी जाने वाली तालीम ऐसे स्थान पर रखनी चाहिए जहा पहुचकर शिक्षक खुदको तरोताजा अनुभूत करे। साथ में ऐसे शैक्षिक संस्थानों का चयन करना चाहिए जो आदर्श सुविधाओं से

सज्ज हो और शिक्षक इन संस्थानों को देखके काफी नयी चीजे सिख सके और आपने कार्य क्षेत्र की स्कूल में नयी चीजों और विचारो को अमल में रख सके।

३. शिक्षकों को जिस विषयवस्तु या नए ज्ञान की समझ देने के लिए तालीम का आयोजन किया गया है वह सिर्फ कथन-चर्चा से नहीं बल्कि नयी तकनीक के जरिये देना आवशयक है। साथ ही नई शैक्षिक तकनीक के बारे में शिक्षक को अवगत करवाना और उसकी कार्यरचना का भी ज्ञान देना आवशयक है । वर्तमान और भविष्य के लिए शिक्षा ज्यादातर तकनीक और शैक्षिक उपकरणों से जुडी हुई है तो शिक्षकों को इसके लिए अभी से तैयार करना अति आवशयक है ।

४. शिक्षक-तालीम में परिवर्तन की बात करते है तो नए-नए मोबाइल-अप्प्स , ब्लॉग बनाना, क्विज़, पोर्टफोलियो बनाना, परीक्षा पद्धति में ऑनलाइन की योजना बनाना, प्रोजेक्ट-वर्क, स्कूल को क्लस्टर की सभी स्कूलों के साथ शिक्षक और विद्यार्थियों को जोड़ना इत्यादि नए नए विचारो से अवगत करवाना आजके समय की अतिमहत्वपूर्ण आवशयकता है।

५. तालीम देने वाले मास्टर ट्रेनर या शिक्षकों को भी विशिष्ट ज्ञान से युक्त होना आवशयक है। मास्टर-ट्रेनर को विषयवस्तु के साथ साथ तकनिकी प्रयोग और प्रेजेंटेशन का सही प्रयोग करके तालीम को रुचिकर और असरकारक बनाना जरुरी है। पूरी तालीम का दारोमदार तालीम देनेवाले मास्टर-ट्रेनर पर ही निर्भर करता है । इसीलिए मास्टर-ट्रेनर के चयन में बहोत सावधानी रखनी अति आवशयक है ।

६. शिक्षक-तालीम में नए विचारो, नयी तकनीक और अनुभवी शिक्षकों को भी सम्मिलित करके उनका व्याख्यान रखना जरुरी है । तालीम लेनेवाले शिक्षक भी कई बार नयी चीजे अपने शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान सीखते है और अच्छे परिणाम की प्राप्ति करते है । ऐसे शिक्षकों को अपने अनुभव सभीके समक्ष प्रस्तुत करने का समय देना चाहिए ताकि अन्य स्कूल के शिक्षकों को भी इसका ज्ञान मिलेगा।

७. तालीम के पुराने ढांचे को बदलते हुए अब तालीम में नए ज्ञान के साथ साथ नए आदर्श स्कूल का प्रवास करवाना, शैक्षिक-गेम्स का आयोजन करना, शिक्षक क्विज़-कांटेस्ट का आयोजन , शैक्षिक-नाटक या रोलप्ले , निवासी-तालीम जैसी नयी तालीम के पहलुओं को शिक्षक तालीम में समाविष्ट करना चाहिए।

८. तालीम के लिए दी जाने वाली मुद्रित सामग्री कई बार समय पर नहीं दी जाती या कई बार मुद्रित सामग्री इतनी निरुत्साही करनेवाली होती है की शिक्षक तालीम के शुरू होते ही निरुत्साही हो जाते है । मुद्रित सामग्री की बजाय जरुरी है की (वर्चुअल क्लासरूम) आभासी-कक्ष में तालीम दी जाए तो बहेतर रुचिपूर्ण रहेगा।

९. शिक्षक-तालीम को लेकर शिक्षकों की मानसिकता भी परिवर्तित करनी बेहद जरुरी है । इसके लिए शिक्षक-तालीम में प्रयोग होने वाले "तालीम" शब्द को बदल देना चाइये। तालीम शब्द से शिक्षकों को यह लगता है की इतना पढ़ लिखके और परीक्षा और मेरिट में आगे के स्थान पर आकर यह शिक्षक के व्यवसाय में जुड़े है तो अब और किसी तालीम की उन्हें आवशयकता नहीं है। शिक्षकों की इस मानसिकता को बदलने के लिए "तालीम" शब्द का प्रयोग न करते हुए अन्य शब्द या नाम देना जरुरी है,। जिनसे शिक्षक खुदकी मानसिकता परिवर्तित कर सकता है । जैसे की शिक्षक सज्जता कार्य शाला , शिक्षक नवसर्जन सत्र।

१०. शिक्षक-तालीम में कई बार देखा गया है की तालीम के दौरान उन्हें निचे बिठा दिया जाता है। छोटे से स्कूल के कमरे में बिठा कर भेड़-बकरिओ की तरह ५-६ घंटे तक तालीम दी जाती है। पीने का पानी का आभाव, बिजली की असुविधा, खान-पान में कटौती करना, शिक्षकों को सही तरह से

सम्मान न देना इत्यादि बाते भी शिक्षकों के मानसपट पर बुरा प्रभाव डालती है। इन सब बातो से तंग आकर भी शिक्षकों का तालीम से मन उठ जाता है, और शिक्षकों का तालीम में सही उध्येश प्राप्त नहीं कर पा रहे है।

११. शिक्षक-तालीम की योजना बनानेवाले और उन्हें अमल में लानेवाले बी.आर.सी., सी.आर.सी., बी.आर.पी., डाइट के प्रबंधक शिक्षक तालीम में राज्य सरकार से मिलनेवाले अनुदान में से काफी अनुदान का दुरूपयोग करके कम से कम पैसे में तालीम निपटा देते है, और शिक्षकों को जरुरी सुविधा के अभाव में तालीम के दिन काटने पड़ते है।

१२. वर्तमान शिक्षकों को फेलोशिप के बारे में जानकारी नही होती और होती है तो बहोत कम और सिमित ज्ञान तक वर्तमान समय में राज्य-सरकार, भारत-सरकार, आंतराष्ट्रीय-स्तर पर, NGO-स्तर पर मिलनेवाली फेलोशिप काफी अलग-अलग स्तर पर और विविध विषयो से सम्बंधित मिल रही है। इनकी जानकारी शिक्षकों को ज्यादा से ज्यादा देनी चाहिए और शिक्षक आपने बच्चो को प्रेरित कर सके, जिससे की आर्थिक रूप से कमजोर लेकिन बुद्धिवान और कौशलवान बच्चे फ़ेलोपशिप के जरिये आगे बढ़ सके।

निष्कर्ष:

शिक्षक-तालीम एक बहुउद्येश्यपूर्ण शिक्षा-प्रणाली का हिस्सा है। वर्तमान तालीम में काफी पहलुओं पर काम करके उन्हें सुधारा जाना चाहिए और काफी नए विचारो को अपनाते हुए वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखते हुए तालीम के ढाँचे को परिवर्तित करनेकी आवशयकता है। शिक्षक कभी अपने व्यवसाय से विमुख होना नहीं चाहता और न कभी निरुत्साही या नकारात्मक सोच सकता है। लेकिन वर्तमान शिक्षा-प्रणालीमे शिक्षक के हिस्से में काफी आलोचना आती है। गुजरात में जहा काफी पढाई करके, अच्छी डिग्री हासिल करके टी.इ.टी., टी.ऐ.टी. जैसी शिक्षक भर्ती परीक्षा अच्छे नंबर से पास करके नौकरी पाते है, उन्ही शिक्षकों को मासिक फिक्स तनख्वाह पर पुरे ५ साल तक काम करना पड़ता है। वही दूसरी तरफ शिक्षकों को बच्चो का शारीरिक और मानसिक सजा न देते हुए और फ़ैल न करने की शर्तो पर काम करना पड़ता है। शिक्षण व्यवसाय के साथ-साथ कई दूसरे सरकारी आँकड़े इकठ्ठा करने के काम में भी लगा दिया जाता है। इन सभी पहलुओं को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। फिरभी आज के इस विपरीत समय में शिक्षक आज भी आपने कार्य को पूरी निष्ठा से कर रहा है।

शिक्षक देश के भविष्य का निर्माता है। लेकिन इसी भविष्य के निर्माता को निर्माण करने के लिए जितना जरुरी मुक्त वातावरण मिलेगा और सुविधाए मिलेगी तभी वह अपना श्रेष्ठ परिणाम दे सकता है।

शिक्षक-तालीम में शिक्षकों को मिलनेवाली सुविधाए और अधिक देनी चाहिए। तालीम में शिक्षकों को मिलनेवाली प्राथमिक सुविधाए में बढ़ोतरी करनी चाहिए, साथ ही नयी तकनीक की जानकारी और उन्हें विषयवस्तु के साथ जोड़के किस तरह से बहेतर परिणाम प्राप्त कर सकते है, उनकी जानकारी देनी चाहिए। शिक्षकों को शिक्षण से जुड़े मोबाइल-अप्प्स, ब्लोग्स बनाना, सरकार द्वारा समय समय पर विद्यार्थियों को मिलने वाली शिष्यवृति, राजय-देश-आंतराष्ट्रीय फेलोशिप के बारेमे जानकारी देनी चाहिए ताकि वह उन जानकारिओं को विद्यार्थियों तक ले जा सके। विविध प्रतियोगिताओ के बारेमे शिक्षक-

तालीम में जानकारी देनी चाहिए ताकि बच्चो के इनसब प्रतियोगिताओ में समय समय पर हिस्सा लेने का अवसर प्राप्त कर सके। शिक्षक-तालीम के जरिये ही नयी चीजे और बाते बच्चो तक पहोचाई जा सकती है। इसीलिए यह आवशयक है की तालीम में पुराने ढाँचे को बदलके नए परिवर्तन के साथ नए उध्येशो को स्थापित कर सके।

*** Corresponding Author:**
डॉ. नरेंद्रकुमार पाल
Assistant Professor, M.Ed. College, 38, Keshav Bunglows,
New Shahibaug, Ahmedabad
(drnavinsir@yahoo.in , 9924181920)